सिर्फ कानूनी कार्रवाई से नहीं रुकेगा

तहलका के सम्पादक तथा स्वामी तरुण तेजपाल पर कानूनी कार्यवाही हो ही गई। पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार किया और अदालत ने पुलिस रिमांड भी दिया। अब कार्यवाही आगे होती रहेगी। उनपर ऐसी कार्यवाही हो इसके लिए समाज के सक्रिय लोगों का वर्ग तो था ही पर मीडिया भी उतना ही सक्रिय बना रहा। मीडिया ने उनपर लगे आरोप का न तो विरोध किया, न उनकी तरफदारी की और न ही उस पर चल रही अपनी बहस को रोका। अगर यह कहें कि कानूनी कार्यवाही होने का कारण मीडिया रहा तो बहुत ज्यादा गलत नहीं होगा। इसलिए भी कि राजनीतिक वर्ग के लोग तरुण के पक्ष और विपक्ष में थे और कहा जा रहा था कि उनपर कार्यवाही की मांग राजनीतिक कारणों से है। तरुण के यौन दुर्व्यवहार से पीड़ित मीडियाकर्मी की शिकायत को भी इसी रंग से देखा जाने लगा था। पर मीडिया और महिला एक्टिविस्टों के सतत विरोध से यह रंग पूरी तरह से चढ़ नहीं सका।

इस प्रकरण ने यह तो पूरी तरह से स्पष्ट किया कि मीडिया अपने ही वर्ग के किसी व्यक्ति के द्वारा किये गये सामाजिक अपराध या अहित अथवा मूल्यहीनता के संबंध में वर्ग के बचाव के बजाय कार्यवाही तथा विमर्श का पक्ष लेता रहा है। उसका यह कदम भी इसी बात का द्योतक है। पेड न्यूज के मामले को भी मीडिया ने ही उठाया और उस पर मीडिया के लोगों को कटघरे में खड़ा करने में भी वह आगे रहा। आपको याद होगा कि बरसों पूर्व जब प्रभाष जोशी ने अपनी टिप्पणी राजस्थान में हुई महिला के सती होने के संबंध में की थी, तब लोगों के साथ मीडिया भी उनके उस दृष्टिकोण का आलोचक था। हालांकि प्रभाष जोशी ने तब कहा भी था कि उनकी टिप्पणी के मायने गलत लिये जा रहे हैं, फिर भी मीडिया ने उनका पक्ष नहीं लिया। ऐसे अन्य मामले भी हैं। तात्पर्य यह कि मीडिया अपने वर्ग के विचार और व्यवहार की निरपेक्ष समीक्षा प्राय: करता रहा है। इसके लिए नि:संदेह उसकी प्रशंसा की जानी चाहिये और उम्मीद रखनी चाहिये कि वह अपने इस निरपेक्ष दृष्टिकोण को बनाये रखेगा।

इसे इस तरह से भी देखें। मूल्यहीनता, असम्मान, सामाजिक अहित आदि के प्रसंग राजनीति, प्रशासन तथा न्याय के क्षेत्रों में भी होते रहे हैं। राजनीतिक लोगों को तो काजर की कोठरी वाला ही माना जाने लगा है। प्रशासन के लोगों पर भी ऐसे आरोप लगते रहे हैं। अब तो सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश पर भी ऐसा ही आरोप लगाया गया है। आप देखें कि इन वर्गों में इस तरह के अप्रचार या मूल्यहीनता पर अपने ही वर्ग की उस तरह से समीक्षा नहीं की गई। प्रत्युत आरोपी के पक्ष में यह वर्ग

खड़ा दिखाई दिया है। आरोप चाहे भ्रष्टाचार के रहे हों या यौन केन्द्रित व्यवहारों के पर इस वर्ग ने प्राय: अपने वर्ग के व्यक्ति का बचाव ही किया। इस मायने में मीडिया का रवैया इन सभी से भिन्न रहा है और उसने हमेशा यह प्रयास किया है कि नियम तथा मूल्याधारित व्यवहार की पक्षधरता की जाये।

संभवत: बहुत से लोग इस बात से सहमत होंगे कि यह विमर्श अब भी अधूरा रहा है। मीडिया ने भी फैारी और कानूनी कार्यवाही को ही समस्या का समाधान मान लिया। मीडिया का अपना कार्य-व्यवहार सूचनाओं, जानकारियों और विचारों के साथ अनुसंधानात्मक होता है। वह उन्हें तब स्वीकार करता है जब वे तथ्य और सत्य पर खरे ठहरते हैं। वह यह भी देखता है कि उन सबमें क्या स्थाई या टिकाऊ समाधान है। वह फौरी के साथ स्थाई का पक्षधर है। भ्रष्टाचार, व्यभिचार, हिंसा तथा यौनाचार और यौन केन्द्रित अपराधों के संबंध में यह देखा गया है कि इनका तात्कालिक इलाज कानून के सहारे किया जाता रहा है। यह समझकर कि दंडात्मक कार्यवाही से समस्या का समाधान होगा। पर फिर भी यह सतत बढ़ते गये हैं। इस संबंध में गत बीस वर्षों की जानकारी तो सभी के सामने है। ऐसे में यह चूक मीडिया से भी हुई या हो रही है कि वह इन आरोपों का विमर्श करते हुए इन विकृतियों के मूल की तरफ नहीं जा रहा है।

बहुत संक्षेप में कहा जा सकता है कि इन विकारों के मूल में हमारी वर्तमान भोग केन्द्रित सामाजिक मूल्य संरचना है। एक तरफ हम अपनी ऐंद्रिक आकांक्षाओं के उद्दाम आवेगों को नैसर्गिक मानते हुए उनके दमन के पक्षधर नहीं हैं और दूसरी तरफ उन आवेगों के कारण हो रहे व्यवहार और व्यापार के विरोध में भी हैं। हम चाहते तो हैं मानवीय संवेदना और मूल्य धारक ऐसा समाज जहां प्रेम, भाईचारा, सहयोग, आदि हो और लोग एक दूसरे के लिए ही नहीं वरन प्रकृति के साथ भी परस्पर जीवन जीने का व्यवहार करें। पर वस्तुस्थिति कुछ और ही होती जा रही है। हम ऐंद्रिक भोग और उसी के अनुरूप की जीवनशैली तथा मूल्यों को अपनाते चले जा रहे हैं। यह एक तरह से विरोधाभासी ही है। ऐंद्रिक कामनाजन्य भोग तथा वैभव एवं स्पर्धात्मक जीवनशैली द्वेष, स्पृहा, वैयक्तिता आदि पर केन्द्रित हैं। वे न तो समावेशी हैं और न ही समन्वयी या सहयोगी। तब वे कामनाओं को उद्दीप्त ही करेंगी। वे स्पर्धा को मूल्यहीन ही बनायेंगी और वैभव के लिए कुछ भी कर गुजरने के लिए प्रेरित करेंगी। इनका स्थाई समाधान तो मानवीय संवेदना में है। उन मूल्यों को आधार बनाने में है जो मनुष्य के प्रति प्रेम और भाईचारा विकसित करते हैं। जो भोग को कामनाओं से पृथक करता हो, ऐसे व्यवहार के पक्षधर हों। मीडिया को फौरी कार्यवाही को तात्कालिक मानते हुए स्थाई समाधान के लिए इस मूल्यधारणा के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन के लिए काम करना होगा तभी यह सब रुक सकेगा।

****